International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 4 Issue 3, May-June, 2016, Impact Factor: 1.554

जीवन संग्राम का अजेय योद्धा: बिल्लेसुर

डॉ. वीरेंद्र कुमार

एसोसिएट प्रोफेसर, राजधानी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

उपन्यास: बिल्लेसुर बकरिहा

उपन्यासकार: सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

शोध का सार तत्त्व : जीवन की प्रत्येक से मुकाबला करते हुए हैं और साहस का साथ नहीं छोड़ना। निडरता और निर्भीकता के साथ अनवरत कर्म पथ पर आगे बढ़ना। अंधविश्वासों, पाखंड के विरुद्ध अपनी प्रगतिशील सोच से मुकाबला करना इस शोध का सार तत्त्व है। निराला 'बिल्लेसुर बकरिहा' में इसी सत्य की जो उनके अपने जीवन सत्य ।

'बिल्लेसुर बकरिहा' उपन्यास निराला की एक अनूठी रचना है। इसमें बिल्लेसुर का असली नाम बिलेश्वर है। पुरवा में उक्त नाम के प्रतिष्ठित शिव हैं ।

रचनाकार ने कहा है कि बकरिहा जहां का शब्द है वहां 'बकरी' को 'बोकरी' कहते हैं। रचनाकार ने हिंदुस्तानी रूप निकालकर बकरिहा किया है। 'हा' का प्रयोग हनन के रूप में नहीं बल्कि पालन के रूप में हुआ है।

निराला के अनुसार –: बिल्लेसुर जाति के ब्राह्मण हैं और 'तरी'के सुकुल है किसी बकरी वाले के पुत्र न होकर सुकुल को संसार पार करने के लिए तरी नहीं मिली तो बकरी पालने का कारोबार किया।"1

बिल्लेसुर के पिता का नाम मुक्ताप्रसाद था। उनके चार पुत्र थे। बिल्लेसुर को पिता बिल्लू कहकर पुकारते हैं।

बिल्लेसुर ने सुना था कि बंगाल का पैसा टिकता है, मुंबई का नहीं। इसलिए बंगाल की तरफ चलें।

उपन्यासकार के अनुसार–– "पास के गांव के कुछ लोग बर्दवान के महाराज के यहां थे सिपाही, अर्दली, जमादार। बिल्लेसुर ने सांस रोककर निश्चय किया, बर्दवान चलेंगे। लेकिन खर्च ना था । पर प्रगतिशील को कौन रोकता है?"2

गांव में गरीबी और अभाव को झेलते बिल्लेसुर बिना पैसा हाथ में हुए ही पहले कानपुर गए और कलकत्ते का टिकट कटा कर गाड़ी में बैठ गए। क्या कर उन्हें गाड़ी से उतार दिया ,लेखक के अनुसार––" बिल्लेसुर हिंदुस्तान के जलवायु के अनुसार सविनय कानून भंग कर रहे थे, कुछ बोले नहीं, चुपचाप उतर आए, लेकिन सिद्धांत नहीं छोड़ा । प्लैटफार्म पर चलते फिरते समझतें बूझते रहे। जब पूरब जाने वाली दूसरी गाड़ी आई बैठ गए। मोगलसराय तक फिर उतारे गए ,लेकिन दो–तीन दिन में चढ़ते उतरते बर्दवान पहुँच गए।"3

बिल्लेसुर के माध्यम से निराला ने अभावमयी और संघर्षमयी स्थितियों के बीच जीवन से जूझने वाला मनुष्य चित्रित किया है जो विद्रोही रूप लिए हुए है। स्वयं निराला भी अभावमयी और संघर्षमयी स्थितियों से भरे जीवन से जूझ रहे थे। उनके जीवन की परिस्थितियां और उनका स्वयं का दृष्टिकोण 'बिल्लेसुर बकरिहा' उपन्यास में आ ही गया

है। इस कृति में समाज की विषमताओं और विसंगतियों– अंधविश्वासों, रूढ़िवादिताओं के खिलाफ निराला खड़े दिखाई देते हैं।

धर्म के आडम्बरों के खिलाफ निराला का विद्रोही रूप बिल्लेसुर में स्पष्ट दिखाई देता है। बिल्लेसुर ब्राह्मण हैं फिर भी बकरी पालन का व्यवसाय करता है । उस परिवेश में ब्राह्मण होकर बकरी पालना एक विद्रोही काम था। बिल्लेसुर बकरी के दूध का खोया और घी बनाकर बाजार में बेचने जाता है। और नहीं बिकने पर कुछ और करने लगता है खाली नहीं बैठता।

बिल्लेसुर अनवरत कर्म में लगा रहता है, हार मान कर बैठता नहीं है। शायद निराला का वास्तविक जीवन संघर्ष भी कुछ ऐसा ही रहा होगा। जीवन एक लंबे संघर्ष की यात्रा है जिसमें हमें चलते जाना है और निर्भयता के साथ धीरज और साहस से सभी विपदाओं का सामना करना है लेकिन परिश्रम का साथ नहीं छोड़ना है।

सत्तीदीन के यहां काम करते हुए बिल्लेसुर को कई तरह के कार्य करने पड़े, वे ऐसे काम करने नहीं आए थे और उन्हें ऐसी अपेक्षा नहीं थी। लेखक के अनुसार – "ढोर चराने के लिए समंदर पार नहीं किया। यह काम गांव में ही था। लेकिन प्रदेश है अपना कोई नहीं। दूसरे के सहारे पर लगना है। सोचा, तब तक कर ले। नौकरी न लगे तो घर का रास्ता लगेंगे यही बिल्लेश्वर गोबर उठाना, गोबर थापना जैसे सभी काम करता है। बिल्लेसुर को जवाब देते देर हुई। सत्तीदीन के स्त्री ने कनपटी घुमाई कि बिल्लेसुर ' कौन बड़ा काम है? काम के लिए ही आया हूं सात सौ कोस– देस सात सौ कोस तो होगा।"4

बिल्लेसुर सत्तीदीन की स्त्री जो आदेश देती है वह करता है, कभी किसी काम को छोटा नहीं मानता।

'बिल्लेसुर बकरिहा' उपन्यास में निराला ने अनेक धार्मिक विश्वासों को ध्वस्त किया है जगन्नाथ जी के दर्शन करके और मनौती मांगने पर भी सत्तीदीन के यहां संतान नहीं होती है । प्रतिदिन महावीर के चरणों में साष्टांग प्रणाम कर और बकरियों की कल्याण की बात सोचने पर भी उसके बकरे की हत्या कर दी जाती है। निराला ने लिखा है "सत्तीदीन की स्त्री एक साल तक जगन्नाथ जी की शक्ति की परीक्षा करती रही। हर सोमवार को दिया देती थी और हर महीने के अंत तक प्रतीक्षा करती थी। लेकिन कोई फल ना हुआ।"5

गांव में बिल्लेसुर बकरियां पालने लगे। लोग उन्हें ब्राह्मण होकर ऐसा करने से टोकते हैं तो बिल्लेसुर कहते हैं " मन में कहा 'जब जरूरत पर ब्राह्मण को हल की मूठ पकड़नी है, जूते की दुकान खोलनी पड़ी है, तब बकरी पालना कौन बुरा काम है।"6 यह प्रगतिशील दृष्टि है।

बकरियों की कल्याण – भावना के लिए वे महावीर को प्रणाम करते हैं" बाहर पीछे की तरफ महावीर जी प्रतिष्ठित थे। अब भी बिल्लेसुर गुरु मंत्र छोड़ चुके थे, फिर भी बकरियों की कल्याण – कामना किए बिना नहीं रह गया – मंदिर में गए। उन्हें महादेव जी से महावीर जी अधिक शक्ति वाले मालूम दिए.. महावीर के पैर छूकर मन ही मन उन्होंने कुछ कहा।"7

लेकिन उनके बकरे की हत्या कर दी जाती है। गुस्से में आ जाते हैं और महावीर की मूर्ति पर डंडा मारते हैं" महावीर जी के पास गए। लापरवाही से सामने खड़े हो गए और आवेग में भरकर कहने लगे " देख मैं गरीब हूं ।तुझे सब लोग गरीबों के सहायक कहते हैं, मैं इसलिए तेरे पास आता था और कहता था कि मेरी बकरियों और बच्चों को देखते रहना। क्या तूने रखवाली की, बता, लिए थूथन –सा मुंह खड़ा है। कोई उत्तर नहीं मिला। बिल्लेसुर ने आंखों से आंखें मिलाते हुए महावीर जी के मुंह पर वह डंडा दिया कि मिट्टी का मुंह गिल्ली की तरह टूट कर बीघे भर के फासले पर जा गिरा।8"

यह है निराला की प्रगतिशील दृष्टि जो बिल्लेसुर के माध्यम से व्यक्त हुई है। निराला ने अपने जीवन में अनंत कष्ट भोगे थे। 'दुख ही जीवन की कथा रही' कहने वाले निराला 'बिल्लेसुर बकरिहा' में भी बिल्लेसुर के माध्यम से व्यक्त करते हैं –– "दुख का मुंह देखते देखते उसकी डरावनी सूरत को बार–बार चुनौती दे चुके थे। कभी हार नहीं मानी।"9

बकरियों के दूध का खोया बनाकर बिल्लेसुर बेचने लगे तो सफलता न मिली, फिर बकरियों के दूध से घी बनाकर बेचने का प्रयास किया और उसमें भी पर्याप्त सफलता न मिली तो शकरकंद की खेती करने लगे ।बिना हल –बैल के खुद अपने हाथों से कुदाल लेकर खेत खोद डाला – "फावड़े से खेत गोड़ते देखकर गांव के लोग मजाक करने लगे, लेकिन बिल्लेसुर बोले नहीं ,काम में जुटे रहे। दुपहर होते –होते काफी जगह तोड़ डाली। देखकर छाती ठंडी हो गई। दिल को भरोसा हुआ कि दिन में छः –सात दिन में अपनी मेहनत से बकरे का सारा घाटा पूरा कर लेंगे... तीसरा पहर पूरा नहीं हुआ, उठकर फिर खेत गोड़ने चले। शाम तक खेत गोड़कर, बकरियों के लिए पत्ते काटकर, पहर भर रात होने पर घर आए। सात दिन की जगह पाँच ही दिन में बिल्लेसुर खेत का वह हिस्सा गोड़ डाला।"10

इस प्रकार 'बिल्लेसुर बकरिहा' में निराला ने बिल्लेसुर के माध्यम से प्रगतिशीलता की दिशा दिखाते हुए कभी हार न मानने वाले और अनवरत परिश्रम करने वाले उस व्यक्ति की तस्वीर दिखाई है जो धैर्य, साहस और निडरता से जीवन की लड़ाई लड़ता है।

लक्ष्मी पांडेय के अनुसार "वे विश्वबंधुत्व के उद्देश्य को लेकर कथा रचते हैं, यही उनकी मानवतावादी दृष्टि है, जो उन्हें महामानव 'निराला' बनाती है। मानवीय संवेदना से परिपूर्ण संसार के प्रति राग उत्पन्न करते हैं और राग के बीच वैराग्य को धारण किए रहने का संदेश भी देते हैं।"11

'बिल्लेसुर बकरिहा' उपन्यास में निराला की जीवन दृष्टि और जीवन संघर्ष अवश्य ही कहीं ना कहीं बिल्लेसुर के माध्यम से व्यक्त हुआ है जो विषमताओं और विसंगतियों के बीच फंसे मनुष्यों को धैर्य, निडरता, साहस के साथ निरंतर कर्म की प्रेरणा देता रहता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1 बिल्लेसुर बकरिहा – निराला–पृष्ठ संख्या –1
2 वही–पृष्ठ संख्या –7
3 वही–पृष्ठ संख्या– 7
4 वही–पृष्ठ संख्या–9
5 वही–पृष्ठ संख्या–18
6 वही–पृष्ठ संख्या– 22
7 वही–पृष्ठ संख्या–23
8 वही–पृष्ठ संख्या –31
9 वही–पृष्ठ संख्या– 31
10 वही–पृष्ठ संख्या– 33
11 निराला का साहित्य– लक्ष्मी पांडेय–पृष्ठ संख्या–235

अन्य ग्रंथ –

क – बिल्लेसुर बकरिहा – सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, प्रकाशक– चौधरी राजेंद्र शंकर, युग मंदिर उन्नाव 1941।

ख – निराला की साहित्य साधना––रामविलास शर्मा।

ग – हिंदी उपन्यास एक अन्तर्यात्रा – रामदरश मिश्र।